

॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥
 श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥
 श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥
 श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥
 श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥
 श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥

1794

क... शरांक ॥ ७ ॥ रुद्राह नो वेदपुत्रस्त्रि वेदरोष

धनुषा विगुणो रदाय ॥ विथ करव रजागा नपुतेदु

केदे शुष्क पभा गोद नरवा रापुक्त ॥ १ ॥ केन्द्रा ज्व घ्रा ३

दिषु ने व न दै ल खो नितो म धम विधु ध्रु व स्यात्

प्रात सरद्यो नग ने ॥ २ ॥ युक्तो न्द्रो गग

नागा निधः ॥ ३ ॥ दूरि दुरा मा प्रवरा महि

नरुं गरी वदन्दा नपुतरं ग वन्द्यो देशं तरं दिग्ग

रिते प्रसा ध्यामि तिह कल्पो न स मे ध्रु व स्यात् ॥ ४ ॥

॥ ५ ॥ वसि देशा धृत यो जनानि स गुराप वारो रस मा

जितानि हि नादि कान्यं गगारै वै ध्रु कृष्ण द्या या कु

वेदे फल मंगुला निगम स्वदे सजा पविषु त्प्रभा

स्यामं च लु दध्यां त रिता गति विधि ॥ ६ ॥ राते न म त्तं म

वतिह... ॐ दे॥ नरं सूर्य राशं केन्द्रे ॥
इति सूर्यसि... तस्मात्... नन्दवि... वित
मा... तिकर... ॥ ५ ॥
शुभ... रा... दि... ॥ ५ ॥
दि... रा... ग... रा... त्वा... ले... वा... वि... पा... दि... पा... स... स... रा...
शे... ॥ ५ ॥

रा... क... म... सो... भ... वंति ॥ १ ॥ रा... को... न... वा... दि... दु... क...
रा... नु... पु... क... क... ले... भ... वं... स... द... ग... रा... स... व... त्तः ॥ २ ॥ व... य... न... न... भा... ६
लो... व... न... वे... द... हि... न... रा... स... द... पि... ड... क... थि... त... स... स... वः ॥ ३ ॥ अ
दो... की... नि... धो... र... वि... मा... स... पु... क... स... प्रा... व... से... धा... र... वि... मा... स... न...
था ॥ ४ ॥ जै... श्रु... के... स... य... र... स्त्रे... र... ज्य... सो... रि... च... द... रा... ग... रा...
र... न... मा... स... तो... न... वे ॥ ५ ॥ अ... द... प... य... क... र... व... स... ग... रा... स... रा... ग...

रामकलत्रप्रियचन्द्रपुतः॥ तन्महि शेषादिशुभी
 अशानिलध्वानिशेषागिरस्वसमास्तु॥४॥ अश्वमेध
 गुरोदेष्टापंचयन्त्रकुलोवनाभास्वति करसाप्रो
 कृता चमितामहिरोदना॥५॥ अश्वमेध
 इवसुवन्तरयडुधुः सारितरस्वमलनीम
 ह्यगस्तनाह ते वादरासस्विकेरोषोदि
 वारोप्युता दहवार॥६॥ लोवन्तरवरवा

श्विधूमद्योपराप्रतिथिंपुत्रं द्यागगरसा
 श्विहिनः॥ सताहमाहताहता चुरवेनवेप
 मे अस्मर्याजिवादनरवोसयुता॥७॥
 रपस्वरद्वौ कसरामिपुत्राशितोवमापकु
 नपरातप्रा॥ रववेदनधौधेनवपुपुत्राशित
 दिरी धौ सहितमवेकैः॥८॥ भागमेष्टागिरसा
 पलेकासहितानवाहनागोदवः स प्राप्तिप्रयुता

७॥

७॥

भाति

भाति

गुरो साहिबि दिसो नंद रनि तो वै ॥ १७७ ॥ भुक्त को न
 सरा दुष्टो गगन कुरा ॥ रव बदाव ले लो को धिर खन
 वाध को न नि नारा हो गति बतारे ॥ १७८ ॥ राखा धे
 शिखे तो रामे भुमि ओ भुनि ना हन ॥ १७९ ॥ रादि कम भति
 नो राजा मे ॥ १८० ॥ ए ॥ वतु भक्ति ॥ १८१ ॥ रा को
 रसानी संपु को ॥ १८२ ॥ सुधि भाग आहरे ॥
 ॥ १८३ ॥ नादि कम नै ॥ १८४ ॥ वावा नागा प्रकिर्तिता ॥ १८५ ॥

॥ १८६ ॥ वावा नागा प्रकिर्तिता ॥ १८७ ॥ रा को
 ॥ १८८ ॥ संपु को ॥ १८९ ॥ सुधि भाग आहरे ॥
 ॥ १९० ॥ नादि कम नै ॥ १९१ ॥ वावा नागा प्रकिर्तिता ॥ १९२ ॥ रा को
 ॥ १९३ ॥ संपु को ॥ १९४ ॥ सुधि भाग आहरे ॥
 ॥ १९५ ॥ नादि कम नै ॥ १९६ ॥ वावा नागा प्रकिर्तिता ॥ १९७ ॥ रा को
 ॥ १९८ ॥ संपु को ॥ १९९ ॥ सुधि भाग आहरे ॥
 ॥ २०० ॥ नादि कम नै ॥ २०१ ॥ वावा नागा प्रकिर्तिता ॥ २०२ ॥ रा को

स्वायंकरि

आर्य समाज

ASMA ARCHIVES

774

६ स्वयं वीं करि विप्र मूपा च नान वेनु अजय मा जने वी श्या

राज्ञा श्वेना वन्द्य गुरागार सागित घदि श्वेता नाद्रि स

राहारा गागा ॥ ४ ॥ पवा प्रयो वेद गजा कृतां ता हिरे वे

नो मो मा नु म् व कु सूर्या ॥ अष्टा श्वि वं द्रा नर राम

व द्रा धिदां द्रा रा र म् म् व जि नं श्व ॥ ५ ॥

~~व द्रा धिदां द्रा रा र म् म् व जि नं श्व ॥ ५ ॥~~

१६

रघोः नरां दिगुरां कृत्वा तदधो जन्म कालिका स्मर्यो
मति कथा दिव्योत्कृष्टा विस्तरैश्च वशा पुनः ॥ ६ ॥ स्वतन्त्रम्
स्फुरन् कुप्यद्ब्रह्मत्मा लिकोऽपवेत्ता भोगपाद
वैष्णवगुरां वृत्तासप्राप्तिना स्यात्स्फुटसूर्यभक्तिः ॥ राम
॥ रघुनन्दनप्राप्तिथयः केंद्रं शरां कैकेयदेशात्तदा

तिथयः प्रदेयाः ॥ केंद्रं कनानृषद् शरत्तदधो सौ
मति धादिधौ स्वागसरविदधौ ॥ ८ ॥ इन्दुधुवन्द्यासहित
षस्त्रयेभ्यराज्ञो नयुत्तमार्जितः ॥ चरादिभाविषु राम
वादिमसौ खंचन्दुने त्रैदयचन्द्रखं स्यात् ॥ ९ ॥ पुनर्धुवन्द्यात्
गगने पुलक्यं हीनां सवेदेन पुनः प्रकृत्यात् ॥ तन्मन्त्रम्

गतिसुभारा। अथो न वंद्य बरा गव्य ही नाततो वरिषा चरा
 भाति राविल्लव्यं ॥१५॥ स प्रावरोषं कर्करां ववाद्यंत ब्राह्मिका
 द्याः सिथि वम्वंति ॥ परे देले कल्ल वतुर्दिरि छुति ॥ ५ ॥ १५ ॥
 २१ गामयु पुनिवतु प्यात् ॥१६॥ नागं वकिं सु चुमिति क्रमेण
 यत्वा विद्यात्करणा निमित्तम् ॥१७॥ दिने दिने ह गता रूप
 पपुतं स प्रावस्व एव वरं नंदी नदी ॥ १८ ॥ वर वर वेन्दु केन्दु
 तुपुतं प्रकुप्या गवस्फुटि कारयि मिति प्रसाध्यम् ॥१९॥ २१

भाति २२ ॥ इति श्रीसूर्यसिद्धांतसारे सप्तमं विरचितं भास्वतिक
 ररापं चागनयनोधिकारस्तुतियः ॥३॥ भौमस्वर द्या
 ति बुगगात्कि ताप्रे पुनद्यु वृन्दा विराना महिन ॥ ४ ॥
 प्या पशो वरवरा मनि छ पक्षाक्षि भिसे मसुतस्य
 शिद्युम् ॥१॥ गुरुगुगा द्या बुगगाद्दहा प्रवेदाद्विभिर्लब्ध
 विवर्जितम् ॥

भक्ति
२३

वेदाहता धीरा भाग्यपुत्रस्तित्तत्पदसहितरव
राकै ॥२॥ हानि धुवना भव भागलव धी वायितारपुदयस्य
मध्या ॥ भवति जीवा कन भव चारत भागवोही दु गति
भवतामः ॥३॥ दिव्या रचने नाह वनगां राहि नात्रिभिर् राम
गुणैर्किंकुजे ज्यशिघ्र ॥ अष्टे ६०० सुप ०० अष्ट ६०० नुद ६०० वतु ४००
शताब्द पथक्यहा अष्ट ६०० गते अकेष्टा ॥४॥ अष्ट पाथिका २३

भक्ति अक्षरगारा दिशो ध्याता तेन लब्ध्या स्फुर मकरंद ॥५॥
दिग्वा घनो नादि परीत पात रवागा राही नात्रिभिर् २४
लब्ध्या म ॥ त्याज्यं रवरा के सुपुद अष्टे रवे तत्प्या नुद
गुणैर्जित रवे तशी घुम ॥६॥ ह दान वै दु दिम मान वै
ह द्या अयोग्ये न व सु लेही न ॥ घनाग नाग च पग ययत्त
यनि द्या दुरो दनाही न धनं च म ध्ये ॥७॥ पथक्य
२४ शी द्यो नित के नुद अष्टा अष्टा रत्न शी द्यो न पुत स्फुर स्या
र ॥ पंवर शी स्थिता यत्र अष्टा तत्रैव कार यत् ॥८॥ राम